अपनी आख़िरत के लिये नसीहतों का म... ख़ज़ाना

وصایا امام اعظم

तर्जमा बनाम

इमामे आ'ज़म की वसिय्यतें

IMAME AZAM KI VASIYYATEIN (HINDI)

इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह

इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा नो'मान बिन साबित

अल मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.

SC1226

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़: शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(अल मुस्तत़रफ़, जिल्द:1, स.40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

अच्छी तरबिय्यत के लिये नसीहतों का म-दनी गुलदस्ता

وَصَایَا اِمَامِ اَعْظَم رضی اللہ عنہ

तरजमा बनाम

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वसिय्यतें

इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह
इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
अल मु-तवफ़्फ़ा 150 हि.

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी)
शो'बए तराजिमे कुतुब

: नाशिर :
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

नाम किताब	:	**وَصَایَا اِمَامِ اَعْظَم رضی اللہ عنہ**
तरजमा	:	**इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वसिय्यतें**
मुसन्निफ़	:	इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ
मुर्तज्जिमीन	:	म-दनी उ़-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)
सिने त़बाअ़त	:	र-मजानु मुबारक,1431 सि.ही

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 9 रबीउ़न्नूर 1430 हि. ह़वाला नम्बर : 156

الحمد للّٰہ رب العلمین والصلٰوۃ والسلام علٰی سید المرسلین وعلی الہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब **''वसाया इमामे आ'ज़म''** के तरजमा

''इमामे आ'ज़म की رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वसिय्यतें''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़र सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

07-03-2009

पहले इसे पढ़िये !

इमामुल अइम्मा, सिराजुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने शागिर्दों को इन्तिहाई मुफ़ीद नसीह़तें फ़रमाई जो मुख़्तलिफ़ कुतुब में बिखरी हुई थीं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या** के हुक्म पर **शो'बए तराजिमे कुतुब** के म-दनी उ़-लमा کَثَّرَھُمُ اللہُ تعالیٰ ने अनथक कोशिश से इन नसीह़तों को यकजा कर के इन का उर्दू तरजमा पेश करने की सआ़दत ह़ासिल की है। येह रिसाला ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू यूसुफ़,** ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़ बिन ख़ालिद बसरी,** इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़म्माद**, ह़ज़रते सय्यिदुना **नूह़ बिन अबी मरयम** رَحِمَھُمُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْھِم اَجْمَعِین वग़ैरा अकाबिर तलामिज़ा को, की गई नसीह़तों पर मुश्तमिल है जो इन्सान की ज़ाहिरी व बातिनी दुरुस्ती के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद हैं। इस में इस्लाह़ के बे शुमार म-दनी फूल हैं। म-सलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना, अ़वाम व ख़वास की अमानतें अदा करना, इन्हें नसीह़ते करना, बादशाहे वक़्त के सामने भी ह़क़ बयान करना, ज़ियादा हंसने से बचना, तिलावते क़ुरआने पाक की पाबन्दी करना और अपने पड़ोसी की पर्दा पोशी करना वग़ैरा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदी-नतुल इल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

(اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم)

फ़ेहरिस्त

मज़्मून	सफ़्हा नम्बर	मज़्मून	सफ़्हा नम्बर
इमामे अबू यूसुफ़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ को नसीहतें	4	उ़-लमा से गुफ़्त-गू के आदाब	12
बादशाहों से मैलजोल में एह़तियातें	4	किसी के बड़ों को बुरा कहने से बचना	13
दुन्यवी गुफ़्त-गू से बचने की नसीह़त	6	ज़ाहिर व बात़िन एक रखना	14
अम्रदों से बचने की नसीह़त	6	ओ़हदए क़ज़ा क़बूल करने या न करने की नसीह़त	14
बड़ों का अदब करने की नसीह़त	6	मुनाज़रे के मु-तअ़ल्लिक़ नसीह़त	14
रास्तों और मसाजिद में खाने से परहेज़	7	मुर्दा दिली के अस्बाब	14
अज़्दवाजी ज़िन्दगी के आदाब	7	चलने और गुफ़्त-गू करने के आदाब	15
पहले इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना	9	ज़िक्रुल्लाह عزوجل की कसरत	15
जवानी में ह़ुसूले इ़ल्म की नसीह़त	9	अवरादो वज़ाइफ़ की तल्क़ीन	15
ह़ुस्ने मुआ़शरत की नसीह़त	10	रोज़े रखने की नसीह़त	16
मस्अला बयान करने में एह़तियात़ करना	10	मुह़ा-स-बए नफ़्स	16
ह़ुसूले इ़ल्म पर इस्तिक़ामत की नसीह़त	11	ख़रीदो फ़रोख़्त की एह़तियातें	16
त़-लबा की ख़ैर ख़्वाही की नसीह़त	11	आ़जिज़ी की नसीह़त	17
झगड़ालू से न उलझना	11	मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की इस्लाह़ का त़रीक़ा	18
बयाने ह़क़ में निडर होने की नसीह़त	12	बादशाह की इस्लाह़ का त़रीक़ा	18
अहले इ़ल्म का अदब करना	12	मौत को ब कसरत याद करने की नसीह़त	19

मज्मून	सफ़्हा नम्बर	मज्मून	सफ़्हा नम्बर
ख़्वाबों की तस्दीक़ करने की नसीहत	19	यूसुफ़ बिन ख़ालिद रحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ को नसीहतें	25
बुरी सोहबत से बचना	20	जाहिलों से ए'राज़ की नसीहत	27
मस्जिद जाने में जल्दी करना	20	हज़रते हम्माद رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ को नसीहतें	31
मश्वरा देने के आदाब	20	दुआए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार और इस की फ़ज़ीलत	33
बा मुरुव्वत रहने की नसीहत	21	मुसीबत से बचने का वज़ीफ़ा	33
इज़्हारे ग़िना व इख़्फ़ाए फ़क़्र की तल्क़ीन	21	पांच लाख में से पांच अहादीस का इन्तिख़ाब	35
हम्माम में जाने की एहतियातें	21	नूह बिन अबी मरयम رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ को नसीहतें	37
काम काज के लिये नोकर रखने की तरग़ीब	22	ओहदए क़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ नसीहतें :	37
टेक्स न लेने की नसीहत	22	इमामे आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ का मक्तूब	38
इल्मी गुफ़्त-गू करने के लिये अफ़राद का इन्तिख़ाब	22	अकाबिर तलामिज़ा को नसीहतें	41
बुज़ुर्गों की बारगाह के आदाब	23	क़ाज़ियों के लिये हिदायात	42
इल्मी महाफ़िल के आदाब व एहतियातें	24	★★★★★	★★

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

(1)...... इमामे अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को नसीहतें

बादशाहों से मैलजोल में एह्तियातें :

﴾1﴿ ...... ऐ या'कूब [1] ! बादशाह की इ़ज़्ज़त व तौक़ीर करना। उस के मन्सब की अ़-ज़मत का लिहाज़ रखना और उस के सामने झूट बोलने से इज्तिनाब करना।

﴾1﴿...... जब तक बादशाह से तुझे कोई इ़ल्मी ह़ाजत दरपेश न हो बिला ज़रूरत उस के दरबार में न जाना क्यूं कि अगर तू उस के साथ ज़ियादा मैलजोल रखेगा तो वोह तुझे हलका और ह़क़ीर जानने लगेगा और तेरी क़द्रो मन्ज़िलत उस की नज़र में कम हो जाएगी। इस लिये बादशाह से आग जैसा बरताव कर कि दूर रह कर उस से नफ़्अ़ ह़ासिल कर और जिस त़रह़ जलने और तक्लीफ़ में मुब्तला होने के डर से आग के क़रीब कोई नहीं जाता इसी त़रह़ बादशाह के क़रीब जाने से भी कतराते रहना और उस की ईज़ा से ख़ुद को बचाते रहना क्यूं कि वोह अपने इ़लावा किसी को कुछ नहीं समझता।

﴾3﴿...... बादशाह के सामने कस्रते कलाम से गुरेज़ करना क्यूं कि वोह अपने मुसाहिबों और दरबारियों के सामने तुझ पर अपने इ़ल्म की बरतरी

1...... इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम **या'कूब** है मगर अपनी कुन्यत अबू यूसुफ़ से मशहूर हैं। इ़ल्मिय्या

जताने के लिये तुम्हारी बातों पर पकड़ करेगा और तुम्हारी ग़-लतियां निकालेगा जिस की वजह से तुम लोगों में ज़लील हो जाओगे।

﴾4﴿..... इस बात का ख़याल रखना कि जब तुम बादशाह के दरबार में जाओ तो वोह तुम्हारे और आम लोगों के मक़ाम व मर्तबा में फ़र्क़ पहचानता और इस का लिहाज़ करता हो।

﴾5﴿..... बादशाह के पास जाते हुए इस बात का लिहाज़ रखना कि उस के दरबार में ऐसे अहले इल्म हज़रात मौजूद न हों जिन के इल्मी मक़ाम की तुम्हें ख़बर न हो क्यूं कि ऐसी सूरते हाल में ख़दशा है कि तुम्हें उन से ज़ियादा इज़्ज़त व मक़ाम बख़्शा जाए हालां कि वोह तुम से ज़ियादा इल्म वाले हों तो येह बात तुम्हें नुक़्सान देगी या हो सकता है तुम्हारा मक़ाम व मर्तबा कम कर दिया जाए हालां कि तुम इल्म में उन से बढ़ कर हो। तो इस वजह से तुम बादशाह की नज़र से गिर जाओगे।

﴾6﴿..... जब तुम्हें कोई शाही ओहदा पेश किया जाए तो उस वक़्त तक क़बूल न करना जब तक तुम येह न जान लो कि बादशाह इल्म और फ़ैसलों में तुम्हारे मस्लक व मज़्हब से राज़ी है ताकि हुकूमती मुआ-मलात में किसी दूसरे के मस्लक की तरफ़ रुजूअ न करना पड़े।

﴾7﴿..... बादशाह के मुसाहिबीन व मुहाफ़िज़ीन से हरगिज़ तअ़ल्लुक़ात क़ाइम न करना बल्कि सिर्फ़ बादशाह से तअ़ल्लुक़ रखना।

﴾8﴿..... उस के मुसाहिबीन से दूर रहना ताकि तुम्हारा जाहो जलाल बाक़ी रहे।

﴾9﴿..... अवाम के सामने इतनी ही बात करना जितनी तुम से पूछी जाए।

दुन्यवी गुफ़्त-गू से बचने की नसीह़त :

﴾10﴿.....हमेशा इ़ल्मी बात करना, दुन्यवी मुआ़-मलात व तिजारत के बारे में गुफ़्त-गू से इज्तिनाब करना क्यूं कि इस से नुक़्सान येह होगा कि लोग माल की त़रफ़ तुम्हारी रग़बत देख कर तुम पर रिश्वत के लैन दैन की बद गुमानी में मुब्तला हो जाएंगे।

﴾11﴿..... आ़म लोगों के दरमियान बैठो तो हंसी मज़ाक़ से एह़तिराज़ करना।

﴾12﴿..... बिला ज़रूरत बाज़ार में ज़ियादा आने जाने से बचना।

अम्रदों से बचने की नसीह़त :

﴾13﴿..... अम्रदों (या'नी जिन लड़कों को देख कर शहवत आए उन) से गुफ़्त-गू न करना क्यूं कि वोह फ़ितने का बाइ़स हैं। छोटे बच्चों के साथ गुफ़्त-गू करने और उन के सरों पर हाथ फैरने में ह़रज नहीं।

बड़ों का अदब करने की नसीह़त :

﴾14﴿..... ग़ैरे आ़लिम बूढ़ों के साथ रास्तों के दरमियान न चलना क्यूं कि अगर तूने उन को मुक़द्दम किया तो तेरे इ़ल्मी मक़ाम को ऐ़ब लगेगा और अगर उन से आगे चला तो तुझ पर ऐ़ब लगेगा कि तूने उन का एह़तिराम नहीं किया ह़ालां कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो हमारे बड़ों की

इ़ज़्ज़त और छोटों पर शफ़्क़त नहीं करता वोह हम में से नहीं ।"

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة، ماجاء فی رحمة الصبیان،
الحدیث:۱۹۱۹،ص۱۸٤٥، دار السلام للنشر والتوزیع الریاض)

रास्तों और मसाजिद में खाने से परहेज़ :

﴿15﴾...... रास्तों में मत बैठना, ज़रूरत हो तो मस्जिद में बैठ जाना।

﴿16﴾...... बाज़ारों और मस्जिदों में न खाना पीना, न ही दुकानों पर बैठना।

﴿17﴾...... सबीलों और उन पर पानी पिलाने वालों से पानी न पीना (कि वोह आ़लिम और जाहिल में फ़र्क़ नहीं करते) ।

﴿18﴾...... रेशम और ज़ेवर (सोने की अंगूठी, लॉकेट वग़ैरा) और किसी क़िस्म का सिल्क (या'नी रेशम) न पहनना क्यूं कि इस का इस्ति'माल तुझे तकब्बुर में मुब्तला कर देगा।

अज़्दवाजी ज़िन्दगी के आदाब :

﴿19﴾...... अपनी शरीके ह़यात से बिस्तर में ज़ियादा गुफ़्त-गू न करना, ब वक़्ते ज़रूरत और ब क़द्रे ज़रूरत बात पर ही इक्तिफ़ा करना।(1)

﴿20﴾...... औ़रत से ज़ियादा जिमाअ़ करने और उस को ज़ियादा छूने से इज्तिनाब करना।

﴿21﴾...... जिमाअ़ से क़ब्ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना फिर उस

1...... आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**मश्अ़-लतुल इर्शाद फ़ी ह़ुक़ूक़िल औलाद**" में फ़रमाते हैं : "(दौराने जिमाअ़) ज़ियादा बातें न करे कि (औलाद के) गूंगे या तोतले होने का ख़त़रा है।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 452, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

से हम बिस्तरी करना।

﴿22﴾..... अपनी बीवी के सामने दूसरों की औ़रतों और नोकरानियों का ज़िक्र न करना क्यूं कि इस त़रह़ वोह तुझ से बे परवाह हो जाएगी। और हो सकता है कि जब तू उस के सामने दूसरी औ़रतों का तज़्किरा करे तो वोह भी तुझ से दूसरे मर्दों का ज़िक्र करने लगे।

﴿23﴾..... अगर हो सके तो ऐसी औ़रत से शादी न करना जो बेवा हो या जिस के मां बाप हों या जिस की पहले से औलाद हो और अगर ऐसी औ़रत से निकाह़ करना पड़े तो येह शर्त़ रख लेना कि उस के क़रीबी रिश्तेदार उस से (ब कसरत) नहीं मिलेंगे।

﴿24﴾..... अगर औ़रत मालदार हुई तो उस का बाप दा'वा करेगा कि तेरी बीवी के पास मौजूद माल मेरा है मैं ने इसे आ़रिय्यतन दिया था (इस का मत़्लब येह होगा कि तुम हमारे टुकड़ों पर पल रहे हो और येह बात तुम्हें ना गवार गुज़रेगी)।

﴿25﴾..... जिस क़दर मुम्किन हो अपने सुसराल जाने से एह़तिराज़ करना।

﴿26﴾..... हरगिज़ घर दामाद बनने (या'नी सुसराल के हां रहने) पर राज़ी न होना इस लिये कि अगर तू उन के पास रहने लगा तो वोह माल की लालच में तुझ से तेरा माल ले लेंगे और इस का दूसरा नुक़्सान येह होगा कि तेरी बीवी तेरे अख़्लाक़ो आ़दात में न ढल सकेगी।

﴿27﴾..... औलाद वाली औ़रत से निकाह़ न करना क्यूं कि वोह अपना सारा माल उन के लिये जम्अ़ कर रखेगी और चूंकि उस को अपनी औलाद तुझ से ज़ियादा अ़ज़ीज़ होगी जिस की वजह से वोह तेरा

माल चुरा चुरा कर उन पर ख़र्च करेगी।

﴾28﴿..... एक घर में दो बीवियों को जम्अ़ करने से गुरेज़ करना।

﴾29﴿..... निकाह़ से पहले इस बात की मुकम्मल तौ़र पर तसल्ली कर लेना कि तुम अपनी बीवी की तमाम ह़ाजात व ज़रूरियात पूरी कर सकते हो।

पहले इल्मे दीन ह़ासिल करना :

﴾30﴿..... इस बात का ख़याल रखना कि पहले इल्मे दीन ह़ासिल करना फिर कस्बे ह़लाल से माल जम्अ़ करना इस के बा'द निकाह़ करना और अगर तू दौराने त़ालिबे इल्मी माल की त़लब में मश्ग़ूल हो गया तो इल्मे दीन ह़ासिल न कर सकेगा और माल तुझे लौंडियां और ख़ुद्दाम ख़रीदने पर आमादा करेगा और यूं तू दुन्या में मश्ग़ूल हो जाएगा। ज़मानए त़ालिबे इल्मी में इस बात का भी लिह़ाज़ रखना कि दिल में हरगिज़ औ़रतों की रग़बत पैदा न हो कि यूं तेरा वक़्त ज़ाएअ़ होगा और तेरे अहलो इ़याल कसीर हो जाएंगे और तू उन की ज़रूरियात पूरी करने में मश्ग़ूल हो कर इल्मे दीन और माल दोनों से रह जाएगा।

जवानी में ह़ुसूले इल्म की नसीह़त :

﴾31﴿..... ऐसे वक़्त में त़-लबे इल्म में मश्ग़ूल हो जब कि तेरे जवानी के इब्तिदाई अय्याम हों और तेरा दिल दुन्यवी मुआ़-मलात से फ़ारिग़ हो। इस के बा'द कस्बे ह़लाल करना ताकि तेरे पास कुछ माल जम्अ़ हो

जाए (और निकाह़ से पहले त़-लबे इ़ल्म की ज़रूरत इस लिये है) क्यूं कि अहलो इ़याल की कसरत दिल की तश्वीश का बाइ़स बनती है और जब तेरे पास ब क़द्रे ज़रूरत माल जम्अ़ हो जाए तो निकाह़ कर लेना और अपनी बीवी के साथ उसी त़रह़ ज़िन्दगी बसर करना जिस त़रह़ मैं ने तुझे बताया है।

﴾32﴿..... ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ और तक़्वा, अमानतों की अदाएगी और अ़वाम व ख़वास की ख़ैर ख़्वाही को अपने ऊपर लाज़िम कर लेना।

हुस्ने मुआ़शरत की नसीह़त :

﴾33﴿..... लोगों को अपने से कमतर और ह़क़ीर न जानना बल्कि उन की इ़ज़्ज़ते नफ़्स का लिह़ाज़ रखना और उन से ज़ियादा मेलजोल भी न रखना और जो लोग ख़ुद तुझ से मेलजोल रखना चाहें उन को दीनी मसाइल से आगाह करना ताकि उन में से इ़ल्म का ज़ौक़ रखने वाला त़-लबे इ़ल्म में मश्ग़ूल हो जाए और जो इ़ल्म से दिल चस्पी नहीं रखता वोह नाराज़ हुए बिग़ैर तुझ से दूर हो जाए।

मस्अला बयान करने में एह़तियात़ करना :

﴾34﴿..... अ़वामुन्नास को दीनी बातें इ़ल्मे कलाम के अन्दाज़ में न बयान करना क्यूं कि लोग तुम्हारी तक़्लीद करेंगे और इ़ल्मे कलाम में मश्ग़ूल हो जाएंगे।

﴾35﴿..... जब कोई तुझ से मस्अला दरयाफ़्त करने आए तो उसे सिर्फ़

उस के सुवाल का जवाब देना और उस में ऐसी ज़ियादती न करना जो उसे अस्ल जवाब समझने में दुश्वारी पैदा करे।

हुसूले इल्म पर इस्तिक़ामत की नसीहत :

﴾36﴿..... अगर तुम ख़ूराक और कस्बे मआ़श के बिग़ैर दस साल भी ज़िन्दा रह सको तब भी इल्मे दीन से दूरी इख़्तियार न करना क्यूं कि अगर तुम ने इल्मे दीन से मुंह मोड़ा तो तुम्हारी मईशत तंग हो जाएगी। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا (پ ١٦، طٰہٰ: ١٢٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने मेरी याद से मुंह फैरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है।

त़-लबा की ख़ैर ख़्वाही की नसीहत :

﴾37﴿..... जो लोग तुझ से इल्मे फ़िक़्ह हासिल करें उन पर पूरी तवज्जोह देना और उन सब के साथ बेटों जैसा सुलूक करना ताकि उन की इल्म में रग़बत मज़ीद बढ़े।

झगड़ालू से न उलझना :

﴾38﴿..... अगर कोई बाज़ारी या आ़म शख़्स तुझ से झगड़ा करे तो उन से न झगड़ना बल्कि अ़फ़्वो दर गुज़र से काम लेना क्यूं कि अगर तू उन से झगड़ा करेगा तो लोगों की नज़रों में तेरी इ़ज़्ज़त कम हो जाएगी।

बयाने ह़क़ में निडर होने की नसीह़त :

﴾39﴿..... ह़क़ बयान करने में किसी के रो'ब में न आना अगर्चे बादशाह ही क्यूं न हो।

﴾40﴿..... अपने आप को दीगर लोगों से ज़ियादा इबादत में मश्ग़ूल रखना क्यूं कि जब आ़म लोग तुझे अपनी इबादात से ज़ियादा नेकियों पर मु-तवज्जेह होता न पाएंगे तो वोह तेरे बारे में बुरा गुमान करेंगे और समझेंगे कि इबादत में तेरी दिल चस्पी कम है। नीज़ वोह येह गुमान करेंगे कि तेरे इल्म ने तुझे उतना ही नफ़्अ़ दिया जितना नफ़्अ़ उन्हें उन की जहालत ने दिया।

अहले इल्म का अदब करना :

﴾41﴿..... जब तू अहले इल्म के शहर में दाख़िल हो तो अपने इल्म को (जाहो मन्सब के लिये) मत इख़्तियार करना बल्कि वहां एक आ़म शहरी की त़रह़ रहना ताकि वोह जान लें कि तेरा मक़्सद उन की अ़-ज़मत व बुज़ुर्गी को लोगों की नज़र में कम करना नहीं वरना वोह सब के सब तेरे मुक़ाबले में आ जाएंगे और तेरे मज़्हब पर त़ा'न करेंगे और आ़म लोग भी तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होंगे और तुझे (तेज़) नज़रों से देखेंगे और तू उन के नज़्दीक ख़्वाह म ख़्वाह ज़लील हो जाएगा।

उ़-लमा से गुफ़्त-गू के आदाब :

﴾42﴿..... (अहले इल्म की मौजूदगी में) फ़तवा न देना अगर्चे वोह तुझ से

मसाइल में फ़तवा त़लब करें और न ही उन से बह़स व मुबाह़सा करना।

﴿43﴾..... उन अहले इ़ल्म के सामने बिग़ैर किसी वाज़ेह़ दलील के कोई बात बयान न करना।

किसी के बड़ों को बुरा कहने से बचना :

﴿44﴾..... अहले इ़ल्म के असातिज़ा को बुरा भला न कहना वरना वोह तुझे ला'न त़ा'न करेंगे। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है। وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ (پ۷،الانعام:۱۰۸) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें गाली न दो जिन को वोह **अल्लाह** के सिवा पूजते हैं कि वोह **अल्लाह** की शान में बे अ-दबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से।''[1]

﴿45﴾..... लोगों से मोह़तात़ रहना (या'नी किसी से धोका न खाना)।

1..... ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल, सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुराद आबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबा-रका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''क़तादा का क़ौल है कि मुसल्मान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीह़त हो और वोह बुत परस्ती के ऐ़ब से बा ख़बर हों मगर उन ना ख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पज़ीर होने के शाने इलाही (عَزَّوَجَلَّ) में बे अ-दबी के साथ ज़बान खोलनी शुरूअ़ की इस पर येह आयत नाज़िल हुई। अगर्चे बुतों को बुरा कहना और उन की ह़क़ीक़त का इज़्हार त़ाअ़त व सवाब है लेकिन अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की शान में कुफ़्फ़ार की बद गोइयों को रोकने के लिये इस को मन्अ़ फ़रमाया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है येह ह़ुक्म अव्वल ज़माने में था जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई मन्सूख़ हो गया।''

ज़ाहिर व बातिन एक रखना :

﴾46﴿..... तू जिस त़रह़ लोगों के सामने रहे उन की ग़ैर मौजूदगी में भी उसी त़रह़ रहना क्यूं कि तेरा इल्मी मुआ़–मला उस वक़्त तक सह़ीह़ नहीं हो सकता जब तक तू अपने ज़ाहिर व बातिन को एक न कर ले।

ओ़हदए क़ज़ा क़बूल करने या न करने की नसीह़त :

﴾47﴿..... जब बादशाह तुम्हें किसी ऐसे काम की ज़िम्मादारी सोंपे जो तुम कर सकते हो तो उसे उस वक़्त तक क़बूल न करना जब तक इस बात का यक़ीन न हो जाए कि अगर तुम उस काम की ज़िम्मादारी क़बूल नहीं करोगे तो कोई ना अहल क़बूल कर लेगा जिस से लोगों को नुक़्सान पहुंचेगा और इस के साथ साथ इस बात का भी यक़ीन हो कि तुम्हें वोह ओ़हदा तुम्हारी इल्मी क़ाबिलिय्यत की वजह से दिया जा रहा है।

मुनाज़रे के मु–तअ़ल्लिक़ नसीह़त :

﴾48﴿..... मजलिसे मुनाज़रा में ख़ौफ़ और घबराहट के साथ गुफ़्त–गू करने से बचना कि येह दिल में ख़लल पैदा करता है और ज़बान बोलने से रुक जाती है।

मुर्दा दिली के अस्बाब :

﴾49﴿..... ज़ियादा हंसने से बचना कि इस से दिल मुर्दा हो जाता है।

﴾50﴿..... औरतों के साथ ज़ियादा बात चीत करने और उन की हम नशीनी इख़्तियार करने से बचना कि येह भी दिल के मुर्दा होने का सबब है।

चलने और गुफ़्त-गू करने के आदाब :

﴾51﴿..... हमेशा वक़ार और सुकून के साथ चलना और अपने कामों में जल्द बाज़ी न करना।

﴾52﴿..... जो तुझे पीछे से पुकारे उसे जवाब न देना कि जानवरों को पीछे से आवाज़ दी जाती है।

﴾53﴿..... दौराने गुफ़्त-गू इस बात का ख़याल रखना कि न तेरी आवाज़ ज़रूरत से ज़ियादा बुलन्द हो और न गुफ़्त-गू में चीख़ो पुकार हो।

﴾54﴿..... इत्मीनान व सुकून को इख़्तियार करना कि लोगों पर तेरी अ-ज़मत साबित हो।

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसरत :

﴾55﴿..... जब तू लोगों के दरमियान बैठे तो ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ की कसरत कर ताकि उन की भी येह आदत बने।

अवरादो वज़ाइफ़ की तल्क़ीन :

﴾56﴿..... नमाज़ों के बा'द अपने अवरादो वज़ाइफ़ के लिये मख़्सूस अवक़ात मुक़र्रर कर लो जिस में तुम क़ुरआने ह़कीम की तिलावत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो और उस की अ़ता कर्दा ने'मतों

बिल ख़ुसूस सब्र की तौफ़ीक़ पर उस का शुक्र अदा किया करो।

रोज़े रखने की नसीहत :

﴾57﴿..... हर महीने में चन्द दिन मख़्सूस कर के उन में रोज़े रखा करो ताकि दूसरे लोग भी इस में तुम्हारी पैरवी करें और अपने लिये इतनी इबादत पर राज़ी न होना जितनी पर आम लोग राज़ी हो जाते हैं।

मुहा-स-बए नफ़्स :

﴾58﴿..... अपने नफ़्स की निगरानी करो और दूसरों की भी निगरानी करो ताकि वोह तुम्हारी दुन्या व आख़िरत और तुम्हारे इल्म से नफ़्अ़ हासिल करें।

ख़रीदो फ़रोख़्त की एहतियातें :

﴾59﴿..... बज़ाते ख़ुद ख़रीदो फ़रोख़्त न करो बल्कि किसी ख़ैर ख़्वाह को मुक़र्रर कर लो जो तुम्हारे सारे काम अन्जाम दे और तुम अपने मुआ़-मलात में उस पर ए'तिमाद करो।

﴾60﴿..... अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी और मौजूदा आ'माल से मुत्मइन न होना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला तुम से इन तमाम आ'माल के मु-तअ़ल्लिक़ पूछगछ फ़रमाएगा।

﴾61﴿..... अमरद ख़ुद्दाम (जिन्हें देख कर शहवत आए) मत ख़रीदना।

﴾62﴿..... लोगों पर ज़ाहिर न करो कि मैं बादशाह का क़रीबी हूं अगर्चे

तुम्हें उस का क़ुर्ब हासिल हो क्यूं कि ऐसा करने से वोह तुम्हारे पास अपनी हाजात लाएंगे ताकि तुम बादशाह के दरबार में उन की सिफ़ारिश करो फिर अगर तुम उन की हाजात बादशाह के पास ले गए तो बादशाह तुम्हारी बे इ़ज़्ज़ती करेगा और अगर न ले गए तो तुम्हारा दा'वए क़ुर्ब तुम्हें लोगों की निगाह में ऐबदार बना देगा।

आ़जिज़ी की नसीहत :

﴿63﴾..... अपना शुमार आ़म लोगों में करना लेकिन अपने इ़ल्मी मक़ाम व मर्तबा का लिहाज़ रखना।

﴿64﴾..... बुरे कामों में हरगिज़ लोगों के पीछे न चलना बल्कि अच्छे कामों में उन की पैरवी करना।

﴿65﴾..... जब तू किसी की बुराई पर आगाह हो तो उस की बुराई का ज़िक्र दूसरों के सामने न करना बल्कि उस के अन्दर ख़ैर का पहलू तलाश करना और उस का ज़िक्र उसी ख़ैर के साथ करना। मगर दीनी मुआ़–मलात में लोगों के सामने उस की बुराई बयान करना ताकि लोग उस की पैरवी न करें और उस से बचें क्यूं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़ाजिर की बुराइयों का ज़िक्र करो ताकि लोग उस से बचें।''

(المعجم الکبیر،الحدیث ۱۰۱۰،ج۱۹، ص۴۱۸، دار احیاء التراث العربی بیروت)

मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों की इस्लाह़ का त़रीक़ा :

﴾66﴿..... जब तुम किसी इ़ज़्ज़त व वजाहत वाले शख़्स में दीनी ख़राबी देखो तो उस के जाह व मर्तबे का लिहाज़ किये बिग़ैर उस की इस्लाह़ करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारा और अपने दीन का मददगार होगा और जब तुम ने एक बार भी ऐसा कर दिया तो लोग तुझ से डरेंगे और फिर कोई भी तुम्हारे सामने और तुम्हारे शहर में बिदअ़त ज़ाहिर करने की जुरअत न करेगा और ऐसे शख़्स पर अ़वाम को मुसल्लत़ कर दो ताकि लोग दीनी जिद्दो जहद में तुम्हारी इत्तिबाअ़ करें।

बादशाह की इस्लाह़ का त़रीक़ा :

﴾67﴿..... जब तुम बादशाह के अन्दर कोई ख़िलाफ़े शर-अ़ बात देखो तो उस की इत़ाअ़त करते हुए उस के सामने उस बुराई का ज़िक्र कर दो क्यूं कि उस की त़ाक़त व क़ुव्वत तुम से ज़ियादा है, उस से यूं कहो कि जिन बातों में आप को मुझ पर इक़्तिदार व इख़्तियार ह़ासिल है मैं उन में आप का फ़रमां बरदार हूं लेकिन आप के किरदार में कुछ ऐसी चीज़ें देख रहा हूं जो शरीअ़त के मुवाफ़िक़ नहीं। और याद रहे कि एक मर्तबा नसीह़त कर देना ही काफ़ी है, बार बार बादशाह को नसीह़त करोगे तो उस के दरबारी तुम्हारा असर व रुसूख़ ख़त्म कर देंगे जिस की वजह से दीन को भी नुक़्सान पहुंचेगा। एक या दो मर्तबा नसीह़त कर दो ताकि लोग तुम्हारी दीनी जिद्दो जहद और नेकी की दा'वत के जज़्बे को जान लें। इस के बा'द अगर बादशाह दोबारा किसी बुराई का इरतिकाब करे तो

उस के घर में तन्हाई में उसे इस्लामी अह़काम पर अ़मल करने की तरग़ीब दो और अगर वोह बिदअ़ती हो तो उस से मुनाज़रा करो और क़ुरआने ह़कीम की आयाते बय्यिनात, फ़रामीने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में से जिस क़दर तुम्हें याद हो उसे बयान कर के उस की इस्लाह़ करने की कोशिश करो, अगर वोह ह़क़ बात क़बूल कर ले तो ठीक है वरना बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करो कि वोह तुम्हें ज़ालिमों के ज़ुल्म से महफ़ूज़ रखे।

मौत को ब कसरत याद करने की नसीह़त :

﴾68﴿..... मौत को कसरत से याद करना, अपने असातिज़ा और उन तमाम बुज़ुर्गों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करना जिन से तुम ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया।

﴾69﴿..... और पाबन्दी से क़ुरआने पाक की तिलावत करते रहना।

﴾70﴿..... क़ब्रिस्तान, उ़-लमा व मशाइख़ और मुक़द्दस मक़ामात की ज़ियारत कसरत से करना।

ख़्वाबों की तस्दीक़ करने की नसीह़त :

﴾71﴿..... आ़म लोग मसाजिद, मु-तबर्रिक मक़ामात और क़ब्रिस्तान वग़ैरा में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सालिह़ीने उम्मत رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की ज़ियारत के मु-तअ़ल्लिक़ जो ख़्वाब तुम से बयान करें उन्हें तस्लीम कर लेना।

बुरी सोह़बत से बचना :

﴾72﴿..... ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया की पैरवी करने वालों के पास न बैठना, हां ! दीन और सिराते मुस्तक़ीम की दा'वत देने की ख़ातिर उन के साथ बैठने में ह़रज नहीं।

﴾73﴿..... गालम गलोच और किसी पर ला'नत भेजने से इज्तिनाब करना।

मस्जिद जाने में जल्दी करना :

﴾74﴿..... जब मुअज़्ज़िन अज़ान दे तो उस के बा'द जल्दी मस्जिद में ह़ाज़िरी की कोशिश करना, ताकि आम लोग तुझ पर सब्क़त न ले जाएं।

﴾75﴿..... बादशाह के पड़ोस में घर न बनाना।

﴾76﴿..... अगर तू अपने पड़ोसी में कोई ऐब देखे तो उस की पर्दा पोशी कर कि येह तेरे पास अमानत है और लोगों के राज़ ज़ाहिर करने से बच।

मश्वरा देने के आदाब :

﴾77﴿..... जब कोई शख़्स तुम से मश्वरा त़लब करे तो उसे उस बात का मश्वरा दो जिस के मु-तअ़ल्लिक़ तुम्हें इल्म हो कि येह तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर देगी। और मेरी इस नसीह़त को क़बूल कर लो, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ पाओगे।

﴾78﴿..... और बुख़्ल से बच कि इस से इन्सान ना पसन्दीदा व रुस्वा हो जाता है।

बा मुरुव्वत रहने की नसीह़त :

﴾79﴿..... लालची, झूटा और मुआ़-मलात को गुडमुड करने वाला न बनना बल्कि तमाम उमूर में अपनी मुरुव्वत को मह़फ़ूज़ रखना।

﴾80﴿..... अपने तमाम अह़वाल में सफ़ेद लिबास ही पहनना।

इज़्हारे ग़िना व इख़्फ़ाए फ़क़्र की तल्क़ीन :

﴾81﴿..... दिल के ग़नी बन जाओ, अपने आप को दुन्या में कम रग़बत रखने वाला और मालो दौलत की लालच न करने वाला ज़ाहिर करो और ख़ुद को हमेशा ग़नी ज़ाहिर करो और मोह़ताजी व तंगदस्ती के बा वुजूद इस का इज़्हार न करो।

﴾82﴿..... बा हिम्मत व ह़ौसला मन्द बन के रहना कि पस्त हिम्मत की क़द्रो मन्ज़िलत कम हो जाती है।

﴾83﴿..... रास्ते में चलते हुए इधर उधर देखने के बजाए हमेशा निगाहें नीची रखना।

ह़म्माम में जाने की एह़तियातें :

﴾84﴿..... जब ह़म्माम में जाना हो तो वहां न आ़म लोगों के साथ बैठना और न ही ह़म्माम की उजरत में आ़म लोगों की बराबरी करना बल्कि उन से बढ़ कर उजरत देना ताकि लोगों में तुम्हारी मुरुव्वत ज़ाहिर हो और वोह तुम्हारी इज़्ज़त करें।

काम काज के लिये नोकर रखने की तरग़ीब :

﴾85﴿..... अपना माल जूलाहा (या'नी कपड़ा बुनने वाले) और मुख़्तलिफ़ काम करने वालों के ह़वाले ख़ुद न करना बल्कि इस काम के लिये कोई ऐसा बा ए'तिमाद शख़्स रखना जो येह काम करे।

टेक्स न लेने की नसीह़त :

﴾86﴿..... अनाज और दिरहम व दीनार पर लोगों से टेक्स न लेना।

﴾87﴿..... दराहिम का वज़्न ख़ुद न करना बल्कि इस के लिये किसी बा ए'तिमाद शख़्स का इन्तिख़ाब करना।

﴾88﴿..... अहले इ़ल्म के नज़्दीक ज़लील व ह़क़ीर दुन्या को तुम भी ह़क़ीर जानना क्यूं कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है वोह इस से बहुत बेहतर है।

﴾89﴿..... तमाम मुआ़-मलात किसी बा ए'तिमाद शख़्स के सिपुर्द कर देना ताकि तुम मुकम्मल तौ़र पर इ़ल्मे दीन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हो सको, इस से तुम्हारे जाहो जलाल की ह़िफ़ाज़त रहेगी।

इ़ल्मी गुफ़्त-गू करने के लिये अफ़्राद का इन्तिख़ाब :

﴾90﴿..... बे वुक़ूफ़ों से बात न करना, मुनाज़रे के त़रीक़े और दलील के सलीक़े से ना वाक़िफ़ अहले इ़ल्म से भी कलाम न करना और इ़ज़्ज़त व शोहरत के लिये मसाइले शरइ़य्या में बह़स करने वालों से भी गुफ़्त-गू न करना क्यूं कि उन का मक़्सद येह होगा कि वोह तुम्हें ज़लील व रुस्वा करें और वोह तुम्हारी कोई परवाह न करेंगे अगर्चे जानते हों कि तुम ह़क़ पर हो।

बुज़ुर्गों की बारगाह के आदाब :

﴾91﴿..... बुज़ुर्गों के पास जाओ तो उस वक़्त तक बरतरी न चाहना जब तक कि वोह ख़ुद तुम्हें बरतरी न दें ताकि तुम्हें उन से कोई परेशानी न पहुंचे।

﴾92﴿..... जब तुम कुछ लोगों के साथ हो तो जब तक वोह तुम्हें बतौ़रे ता'ज़ीम आगे न करें उस वक़्त तक उन की इमामत न कराना।

﴾93﴿..... ह़म्माम जाना हो तो दो पहर या सुब्ह़ के वक़्त में जाना और सैर व तफ़रीह़ के मक़ामात की त़रफ़ न जाना।

﴾94﴿..... बादशाहों के ज़ुल्म की जगहों पर उन के पास उस वक़्त तक जाने से गुरेज़ करना जब तक तुम्हें यक़ीन न हो जाए कि तुम्हारी ह़क़ बात मान कर वोह लोगों पर ज़ुल्मो सितम से बाज़ आ जाएंगे इस लिये कि अगर तुम्हारी मौजूदगी में बादशाहों ने किसी ना जाइज़ व ह़राम काम का इरतिकाब किया और तुम त़ाक़त न होने की वजह से उन्हें उस ना जाइज़ फ़े'ल से न रोक सके तो लोग तुम्हारी ख़ामोशी की वजह से उस फ़े'ले नाह़क़ को ह़क़ समझ लेंगे।

﴾95﴿..... इ़ल्मी मह़फ़िल में ग़ुस्से से बचना।

﴾96﴿..... लोगों के सामने क़िस्से कहानियां बयान न करना क्यूं कि क़िस्सा गो ज़रूर झूट बोलता है।

इल्मी महाफ़िल के आदाब व एह्तियातें :

﴾97﴿..... जब तुम किसी साहिबे इल्म की महफ़िल में शिरकत का इरादा करो तो देख लो अगर वोह फ़िक़्ह की महफ़िल हो तो उस में शिरकत कर लो और जो इल्म हासिल करो वोह लोगों के सामने बयान कर दो और अगर वोह आम वाइज़ हो तो उस की महफ़िल में शिरकत न करो ताकि तुम्हारी वजह से लोग धोके में न पड़ें और उस शख़्स के मु-तअ़ल्लिक़ येह न समझें कि येह इल्म के आ'ला द-रजे पर फ़ाइज़ है हालां कि हक़ीक़त में ऐसा नहीं होगा और अगर फ़तवा देने की सलाहिय्यत रखता हो तो लोगों को उस के मु-तअ़ल्लिक़ बताओ और अगर इस की सलाहिय्यत न रखता हो तो उस की महफ़िल में न बैठना कि वोह तुम्हारे सामने दर्स दे बल्कि वहां अपने किसी क़ाबिले ए'तिमाद दोस्त को भेज देना जो उस के कलाम की कैफ़िय्यत और इल्मी मक़ाम के मु-तअ़ल्लिक़ तुम्हें ख़बर दे सके।

﴾98﴿..... ऐसों की महफ़िले वा'ज़ व ज़िक्र में न जाना जो तुम्हारे जाह व मर्तबा और तज़्किये के ज़रीए अपनी शोहरत चाहते हों बल्कि अपने महल्ले के किसी बा ए'तिमाद आदमी को अपने किसी शागिर्द के साथ भेज देना।

﴾99﴿..... ख़ुत्बए निकाह, नमाज़े जनाज़ा व ईदैन पढ़ाने की ज़िम्मादारी अपने अ़लाक़े के किसी ख़तीब के सिपुर्द कर देना, मुझे अपनी नेक दुआ़ओं में याद रखना और मेरी येह नसीहतें क़बूल कर लेना, बिला शुबा

येह तुम्हारी और तमाम मुसल्मानों की इस्लाह़ के लिये हैं ।

الأشباه والنظائر، وصية الامام اعظم لأبی یوسف رحمهما الله تعالى، ص٣٦٧ تا ٣٧٢، دار الكتب العلمية بيروت_مناقب الامام الاعظم للموفق، الجزء الثانی، وصية الامام اعظم لأبي يوسف رحمهما الله تعالى، ص١١٣تا١١٩، مكتبه اسلاميه كوئته)

(2)... ह़ज़रते यूसुफ़ बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ख़ालिद समती बसरी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْقَوى ने तक्मीले इ़ल्म के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ से अपने शहर बसरा जाने की इजाज़त त़लब की तो आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : ‘‘कुछ दिन ठहरो ताकि मैं उन ज़रूरी उमूर के मु–तअ़ल्लिक़ वसिय्यत करूं कि लोगों के साथ मुआ़–मलात करने, अहले इ़ल्म के मरातिब पहचानने, नफ़्स की इस्लाह़ और लोगों की निगहबानी करने, अ़वाम व ख़्वास को दोस्त रखने और आ़म लोगों के ह़ालात से आगाही ह़ासिल करने के लिये जिन की ज़रूरत पड़ती है यहां तक कि जब तुम इ़ल्म ह़ासिल कर के जाओ तो वोह वसिय्यत तुम्हारे साथ ऐसे आले की त़रह़ हो जिस की इ़ल्म को ज़रूरत होती है और वोह इ़ल्म को मुज़य्यन करे और उसे ऐ़बदार होने से बचाए ।’’

﴿1﴾...... याद रखो ! अगर तुम लोगों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश न आए तो वोह तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे अगर्चे तुम्हारे मां बाप ही क्यूं न हों ।

《2》......जब तुम लोगों के साथ अच्छा बरताव करोगे तो वोह तुम्हारे मां बाप की त़रह़ हो जाएंगे अगर्चे तुम्हारे और उन के दरमियान कोई रिश्ता नात़ा न हो।

(ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ख़ालिद बसरी علیہ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं :) "फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया : "कुछ दिन सब्र करो यहां तक कि मैं तुम्हारे लिये अपनी मस्रूफ़िय्यात से वक़्त निकालूं और अपनी तवज्जोह को तुम्हारी त़रफ़ मब्ज़ूल कर लूं और तुम्हें ऐसे उ़म्दा कामों की पहचान करा दूं जिस की वजह से तुम दिली तौ़र पर मेरे शुक्र गुज़ार रहो और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।" जब वा'दे की मुद्दत पूरी हो गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी मस्रूफ़िय्यात से वक़्त निकाला और इर्शाद फ़रमाया :

《3》...... आज मैं तुम्हारे सामने उन ह़क़ाइक़ से पर्दा उठाऊंगा जिन्हें बयान करने का मैं ने क़स्द किया था गोया मैं देख रहा हूं जब तुम बसरा में दाख़िल हो कर हमारे मुख़ालिफ़ीन का रुख़ करोगे, उन पर अपनी बरतरी जताओगे, अपने इ़ल्म के सबब उन के सामने ग़ुरूर व तकब्बुर करोगे, उन से मिलना जुलना, उठना बैठना तर्क कर दोगे। तुम उन की मुख़ा–लफ़त करोगे और वोह तुम्हारी मुख़ा–लफ़त करेंगे, तुम उन्हें छोड़ दोगे और वोह तुम्हें छोड़ देंगे, तुम उन्हें बुरा भला कहोगे और वोह तुम्हें कहेंगे, तुम उन्हें गुमराह कहोगे और वोह तुम्हें कहेंगे और इस से मेरी और

तुम्हारी रुस्वाई होगी। पस तुम उन से दूरी इख़्तियार करने और भागने पर मजबूर हो जाओगे। मगर येह दुरुस्त राय नहीं क्यूं कि वोह अ़क़्ल मन्द नहीं जो उन लोगों से तअ़ल्लुक़ात क़ाइम न कर सके जिन के साथ अच्छे तअ़ल्लुक़ात रखना ज़रूरी हो यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये कोई राह निकाल दे।

﴿4﴾..... जब तुम बसरा में दाख़िल होगे तो लोग तुम्हारे इस्तिक़्बाल और तुम्हारी ज़ियारत को आएंगे, तुम्हारा ह़क़ पहचानेंगे तो तुम हर शख़्स को उस के मर्तबे के लिह़ाज़ से इ़ज़्ज़त देना, शु-रफ़ा की इ़ज़्ज़त और अहले इ़ल्म की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदब व एह़तिराम और छोटों से प्यार व मह़ब्बत करना, आ़म लोगों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम करना, फ़ासिक़ व फ़ाजिर को ज़लीलो रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना, सुल्त़ान की इहानत करने से बचना, किसी को भी ह़क़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आ़दात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना,बिग़ैर आज़माए किसी की सोह़बत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटिया शख़्स की ता'रीफ़ न करना और किसी ऐसी चीज़ से मह़ब्बत न करना जो तुम्हारे ज़ाहिरी ह़ाल के ख़िलाफ़ हो।

जाहिलों से ए'राज़ की नसीह़त :

﴿5﴾..... बे वुक़ूफ़ और जाहिल लोगों से बे तकल्लुफ़ी से मत पेश आना, उन की कोई दा'वत या हदिय्या क़बूल न करना और हर काम इस्तिक़ामत व हमेशगी से करना।

﴾6﴿...... ग़म ख़्वारी, सब्र, बुर्द बारी, हुस्ने अख़्लाक़ और वुस्अ़ते क़ल्बी को अपने लिये लाज़िम कर लेना, नमाज़ में उ़म्दा लिबास ज़ैबे तन करना, सुवारी के लिये अच्छा जानवर रखना और खु़शबू ब कसरत इस्ति'माल करना, अपनी ख़ल्वत के लिये कुछ वक़्त निकालना जिस में अपनी ज़ाती ज़रूरियात पूरी कर सको।

﴾7﴿...... अपने खु़द्दाम की ख़बर गीरी करते रहना, उन की तादीब व तरबिय्यत का खु़सूसी एहतिमाम करना, इस मुआ़–मले में उन से नरमी बरतना और बे जा सख़्ती न करना कि वोह ढीट हो जाएं, उन्हें खु़द सज़ा न देना ताकि तुम्हारा वक़ार बर क़रार रहे, नमाज़ की पाबन्दी करना और ग़रीबों फ़क़ीरों पर स–दक़ा व ख़ैरात करते रहना क्यूं कि बख़ील कभी सरदार नहीं बन सकता।

﴾8﴿...... तुम्हारे पास एक क़ाबिले ए'तिमाद शख़्स होना चाहिये जो तुम्हें लोगों के अह़वाल से आगाह करता रहे, जब तुम किसी की बुराई पर मुत्त़लअ़ हो जाओ तो उस की इस्लाह़ की जल्द कोई तदबीर करना और जब किसी की ख़ूबी से आगाही हो तो उस की त़रफ़ ज़ियादा तवज्जोह और रग़बत करना, उस से भी मिलते रहो जो तुम से मिले और जो न मिले उस से भी मिलते रहे। जो तुम्हारे साथ भलाई करे उस के साथ भी भलाई करो और जो बुराई से पेश आए उस के साथ भी अच्छाई से पेश आओ, अ़फ़्वो दर गुज़र की आ़दत अपनाओ और नेकी का हुक्म देते रहो, फ़ुज़ूल कामों से दूर रहो, जो तुम्हें ईज़ा पहुंचाए उसे मुआ़फ़ कर दो और लोगों के हुक़ूक़ की अदाएगी में जल्दी करो।

﴾9﴿...... तुम्हारा मुसल्मान भाई बीमार हो जाए तो उस की इयादत के लिये जाना और ख़ादिमीन के ज़रीए उस की ख़बर गीरी भी करते रहना और जो तुम्हारी महफ़िल में हाज़िर न हो सके उस के ह़ालात का पता लगाते रहना, अगर कोई तुम्हारे पास आना छोड़ दे तो तुम फिर भी उस के पास जाना न छोड़ना बल्कि उस से मुलाक़ात करते रहना, जो तुम्हारे साथ बे रुख़ी से पेश आए तुम उस से सिलए रेह़्मी से पेश आना, जो तुम्हारे पास आए उस की इ़ज़्ज़त करना, जो बुराई से पेश आए उसे मुआ़फ़ कर देना, जो तुम्हारी बुराई बयान करे तुम उस की ख़ूबियां बयान करना और उन में से कोई वफ़ात पा जाए तो उस के हुक़ूक़ पूरे पूरे अदा करना और किसी को कोई ख़ुशी ह़ासिल हो तो उसे मुबारक बाद देना, और कोई मुसीबत पहुंचे तो ग़म ख़्वारी करना और अगर किसी को कोई आफ़त पहुंचे तो उस से हमदर्दी करना, अगर कोई तुम्हारे पास अपनी ह़ाजत लाए तो उस की ह़ाजत बरारी करना, कोई फ़रियाद करे तो फ़रियाद रसी करना, कोई मदद के लिये पुकारे तो ह़स्बे इस्तित़ाअ़त उस की मदद करना और लोगों के साथ ख़ूब मह़ब्बत से पेश आना, सलाम को आ़म करना अगर्चे घटिया लोगों को करना पड़े। जब तुम्हारी लोगों के साथ कोई मह़फ़िल क़ाइम हो जाए या तुम किसी मह़फ़िल में उन से मिलो और मसाइल में बह़स शुरूअ़ कर दें और उन की राय तुम्हारे मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ हो तो उन के सामने अपना मौक़िफ़ ज़ाहिर न करना, फिर अगर तुम से उन मसाइल के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाए तो पहले लोगों को वोह मस्लक बताना जिसे वोह पहले से जानते हों, फिर

कहना कि इस मस्अले में दूसरा क़ौल भी है और वोह येह है और उस की दलील येह है। पस अगर वोह तुम से उस का ह़ल सुनेंगे तो वोह तुम्हारी क़द्रो मन्ज़िलत जानेंगे।

《10》...... अपने पास हर आने जाने वाले को एक ऐसा मस्अला बता देना जिस में वोह ग़ौरो फ़िक्र करता रहे और लोगों को पेचीदा मसाइल में उलझाने के बजाए आसान आ़म फ़हम मसाइल बताना, उन से मह़ब्बत से पेश आना और कभी कभी ख़ुश त़ब्ई भी कर लिया करना, उन से बात चीत भी करते रहना इस से मह़ब्बत भी बढ़ेगी और इ़ल्म के ह़ुसूल पर इस्तिक़ामत भी रहेगी और कभी कभी उन्हें खाना भी खिला दिया करना और उन की ख़त़ाओं को नज़र अन्दाज़ कर देना।

《11》...... लोगों की जाइज़ ह़ाजात पूरी करते रहना, उन से नरमी बरतना और दर गुज़र करना, किसी के लिय तंग दिली और बेज़ारी ज़ाहिर न करना, उन के साथ इस त़रह़ घुल मिल जाना गोया तुम उन्ही में से हो और आ़म लोगों से ऐसा मुआ़–मला करना जैसा अपने लिये पसन्द करते हो और लोगों के लिये वोही चीज़ पसन्द करना जो अपने लिये करते हो, अपने नफ़्स पर क़ाबू पाने के लिये इसे ख़ामियों से बचाना और इस के अह़वाल की निगह दाश्त करते रहना, फ़ितना व फ़साद अंगेज़ी न करना, जो तुम से नाराज़ हो जाए तुम उस से बेज़ार न होना और जो तुम्हारी बात पूरी तवज्जोह से सुने तुम भी उस की बात ग़ौर से सुनना।

《12》...... लोग तुम्हें जिस काम की तक्लीफ़ न दें तुम भी उन्हें उस काम की तक्लीफ़ न दो और वोह अपने लिये जिस ह़ालत पर राज़ी हों तुम भी उन के लिये उस ह़ालत पर राज़ी हो जाओ।

﴾13﴿..... लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ हुस्ने निय्यत को मुक़द्दम रखना, सच्चाई इख़्तियार करना और तकब्बुर को एक त़रफ़ फेंक देना, धोका देही से बचना अगर्चे वोह तुम्हें धोका दें, लोगों की अमानतें पूरी पूरी अदा करना अगर्चे वोह तुम्हारे साथ ख़ियानत करें, वा'दा वफ़ाई और दोस्ती को पूरा करना, तक़्वा इख़्तियार करना और दीगर मज़ाहिब के लोगों से उन के मज़्हब के मुत़ाबिक़ सुलूक करना।

(आख़िर में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया :)

﴾14﴿..... "अगर तुम मेरी इस वसिय्यत को मज़्बूती से थाम लोगे तो मैं तुम्हारी सलामती की उम्मीद रखता हूं।" फिर फ़रमाया : "तुम्हारी जुदाई मुझे ग़मज़दा कर देगी, तुम्हारी पहचान मुझे तन्हाई में उन्स देती थी, अब ब ज़रीअ़ए ख़त़ व किताबत मुझ से राबित़ा बर क़रार रखना। तुम ऐसे हो जाओ गोया तुम मेरे बेटे और मैं तुम्हारा बाप।"

(مناقب امام اعظم، الجزء الثانی، شروع فی الوصیة لیوسف بن خالد السمتی رضی اللہ عنہ، ص۱۰۶تا۱۰۹)

(3)..... ह़ज़रते हम्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ को नसीह़तें

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد को नसीह़त करते हुए फ़रमाया :) ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हिदायत दे और तेरी मदद फ़रमाए। मैं तुझे चन्द बातों की नसीह़त करता हूं, अगर तुम ने इन्हें याद रखा और इन पर अ़मल किया तो मुझे उम्मीद है कि दुन्या व आख़िरत में सआ़दत मन्द रहोगे। (اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

﴾1﴿..... पहली बात येह है कि "तक़्वा यूं इख़्तियार करना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

से डरते हुए अपने आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना और ख़ालि-सतन उस की बन्दगी करते हुए उस के अह़काम पर पूरी त़रह़ कारबन्द रहना।"

﴿2﴾..... जिस चीज़ के जानने की तुम्हें ज़रूरत हो उस के जानने से जाहिल न रहना।

﴿3﴾..... अपनी किसी दीनी या दुन्यवी ह़ाजत के बिग़ैर किसी से तअ़ल्लुक़ात क़ाइम न करना।

﴿4﴾..... अपनी ज़ात से दूसरों को इन्साफ़ दिलाना और बग़ैर मजबूरी के किसी से अपनी ज़ात के लिये इन्साफ़ का मुत़ा-लबा न करना।

﴿5﴾..... किसी मुसल्मान या ज़िम्मी[1] से दुश्मनी न करना।

﴿6﴾..... **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा माल व इ़ज़्ज़त पर क़नाअ़त इख़्तियार करना।

﴿7﴾..... अपने पास मौजूद माल में हुस्ने तदबीर (या'नी किफ़ायत शिआ़री) से काम लेना और लोगों से बे नियाज़ हो जाना।

﴿8﴾..... अपने ऊपर लोगों की नज़र को कमतर ख़याल न करना।

﴿9﴾..... फ़ुज़ूल फ़िक्रों से अपने आप को बचाना।

﴿10﴾..... लोगों से मुलाक़ात करते वक़्त सलाम में पहल करना, ख़ुश अख़्लाक़ी से गुफ़्त-गू करना, अच्छे लोगों से इज़्हारे मह़ब्बत करते हुए मुलाक़ात करना और बुरों से भी नरमी का बरताव करना।

﴿11﴾..... ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और दुरूदो सलाम की कसरत करना।

---

[1].....ज़िम्मी उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जान व माल की ह़िफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने ज़िम्मे के बदले ज़िम्मा लिया है। (فتاوی فیض الرسول،ج۱،ص۵۰۱) सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं: "हिन्दूस्तान अगर्चे दारुल इस्लाम है मगर यहां के काफ़िर ज़िम्मी नहीं, इन्हें स-दकाते नफ़्ल म-सलन हदिय्या वग़ैरा देना ना जाइज़ है" (बहारे शरीअत, ज़ि.1 हि. 15 स. 931)

दुआए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार और इस की फ़ज़ीलत :

《12》..... दुआए सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल रहना और वोह येह है :

''اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.''

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तूने मुझे पैदा फ़रमाया और मैं तेरा बन्दा हूं और जहां तक हो सका तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं, अपने गुनाहों के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी अ़ता कर्दा ने'मतों का इक़रार करता हूं और अपनी ख़ताओं का ए'तिराफ़ करता हूं। मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, गुनाहों को बख़्शने वाला तेरे सिवा कोई नहीं।

इस की फ़ज़ीलत येह है कि जो शख़्स इन कलिमात को शाम के वक़्त पढ़े फिर उसी रात मर जाए तो जन्नत में जाएगा और सुब्ह़ को पढ़े फिर उसी दिन मर जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا اصبح، الحدیث ٦٣٢٣،ص٥٣٢)

मुसीबत से बचने का वज़ीफ़ा :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा गया : ''आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का घर जल गया।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ''उन कलिमात की ब-र-कत से नहीं जल सकता जो मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से

सुने हैं।" चुनान्चे, (आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :) जो शख़्स सुब्ह के वक़्त येह कलिमात पढ़ेगा तो शाम तक उसे कोई मुसीबत न पहुंचेगी और जो शाम के वक़्त पढ़ेगा तो सुब्ह तक उसे कोई मुसीबत न पहुंचेगी और वोह कलिमात येह हैं :

"اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ، عَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، مَا شَآءَ اللّٰہُ کَانَ وَمَا لَمْ یَشَآءْ لَمْ یَکُنْ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ. اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ، وَاَنَّ اللّٰہَ قَدْ اَحَاطَ بِکُلِّ شَیْءٍ عِلْماً، اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ کُلِّ ذِیْ شَرٍّ وَمِنْ شَرِّ کُلِّ دَابَّۃٍ، اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِیَتِھَا، اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ."

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं ने तुझी पर भरोसा किया और तू ही अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोह हुवा और जो न चाहा वोह न हुवा, नेकी की क़ुव्वत और गुनाह से बचने की क़ुदरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से ही है जो बुलन्द रुत्बा व अ़-ज़मत वाला है। मैं जानता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब कुछ कर सकता है और उस का इ़ल्म हर शै को मुहीत़ है। ऐ पाक परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने नफ़्स के शर से, हर शरीर के शर से और हर उस चौपाए के शर से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की पेशानी तेरे क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही सीधे रास्ते की हिदायत अ़ता फ़रमाता है।

(عمل الیوم واللیلۃ لابن السُّنّی، مایقول اذا اصبح، الحدیث ۵۷، ص ۲۷، دار الکتاب العربی بیروت)

《13》...... रोज़ाना पाबन्दी के साथ कुरआने मजीद, फुरक़ाने ह़मीद की तिलावत करना और उस का सवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अपने वालिदैन, असातिज़ए किराम और तमाम मुसल्मानों को पहुंचाना।

《14》...... अपने दुश्मनों से ज़ियादा दोस्तों के शर से बचना इस लिये कि लोगों की आ़दात में ब कसरत ख़राबियां वाक़ेअ़ हो गई हैं, अब तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे दोस्तों के ज़रीए़ से ही तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सकते हैं।

《15》...... अपना राज़, मालो दौलत, (इख़्तिलाफ़े राय की सूरत में) अपना मौक़िफ़ और आने जाने के अवक़ात को लोगों से पोशीदा रखना।

《16》...... अपने पड़ोसियों के साथ भलाई करना और उन की तकालीफ़ पर सब्र करना।

《17》...... मज़्हबे मुहज़्ज़ब **अहले सुन्नत व जमाअ़त** पर मज़्बूती से कारबन्द रहना, जाहिलों और बद मज़्हबों की सोह़बत से इज्तिनाब करना।

《18》...... अपने तमाम मुआ़–मलात में निय्यत अच्छी रखना और हर ह़ाल में रिज़्क़े ह़लाल के लिये कोशां रहना।

पांच लाख में से पांच अह़ादीस का इन्तिख़ाब :

《19》...... इन पांच फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़मल करना जिन्हें मैं ने पांच लाख अह़ादीस में से मुन्तख़ब किया है।

(1)..... आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर एक के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की।

(صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی.....الخ، الحدیث ۱، ص ۱، دارالسلام للنشر والتوزیع الریاض)

(2)..... इन्सान के इस्लाम की ख़ूबी येह है कि वोह फ़ुज़ूल बातें छोड़ दे।

(جامع الترمذی، ابواب الزهد، باب من حسن اسلام المرء ترکه مالایعنیه، الحدیث ۲۳۱۷، ص ۱۸۸۵، دار السلام للنشر والتوزیع الریاض)

(3)..... तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वोही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحب لاخیه مایحب لنفسه، الحدیث ۱۳، ص ۳)

(4)..... बेशक ह़लाल वाज़ेह़ है और ह़राम भी वाज़ेह़ है और इन दोनों के दरमियान मुश्तबह चीज़ें हैं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ बहुत से लोग नहीं जानते। जो मुश्तबह चीज़ों से बचा उस ने अपनी इ़ज़्ज़त और अपना दीन बचा लिया और जो मुश्तबह चीज़ों में पड़ा वोह ह़राम में मुब्तला हुवा। वोह उस चरवाहे की मानिन्द है जो चरागाह के क़रीब अपना रेवड़ चराता है, उस के चरागाह में चले जाने का अन्देशा है। सुन लो ! हर बादशाह की चरागाह होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की चरागाह उस की ह़राम कर्दा अश्या हैं। ख़बरदार ! जिस्म में गोश्त का

एक लोथड़ा है, जब वोह संवर जाए तो सारा जिस्म संवर जाता है और जब वोह ख़राब हो जाए तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है और वोह (लोथड़ा) दिल है। (صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب فضل من استبرأ لدینه،الحدیث ۵۲،ص ۶)

(5)...... मुसल्मान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसल्मान महफ़ूज़ रहें। (صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه و یده، الحدیث ۱۰،ص ۳)

《20》...... तन्दुरुस्ती की हालत में ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान रहना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हुस्ने ज़न रखते हुए मरना, और क़ल्बे सलीम के साथ उम्मीदे मग़्फ़िरत का ग़-लबा हो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत बख़्शने वाला मेहरबान है।

(4)...... *नूह बिन अबी मरयम* رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْه *को नसीहतें*

ओहदए क़ज़ा के मु-तअ़ल्लिक़ नसीहतें :

हज़रते सय्यिदुना नूह बिन अबी मरयम رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ''मैं हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अहादीस के मआ़नी पूछा करता था तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अच्छी तरह उन की वज़ाहत फ़रमा देते थे। इसी तरह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पेचीदा मसाइल भी दरयाफ़्त किया करता था और मेरे सुवालात आ़म तौर पर

क़ज़ा और अह्कामके मु-तअ़ल्लिक़ होते थे। एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नूह ! तुम क़ज़ा का दरवाज़ा खट-खटाओगे।" चुनान्चे, अपने शहर "**मर्व**" लौटने के चन्द दिन बा'द क़ज़ा की ज़िम्मादारी मेरे कन्धों पर डाल दी गई। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़यात थे। मैं ने ख़त़ के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस बात से आगाह किया और (मजबूरन ओ़हदा क़बूल करने का) उ़ज़्र भी लिखा जिस के जवाब में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे ख़त़ लिखा, उस में फ़रमाया :

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मक्तूब

अबू ह़नीफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की त़रफ़ से अबू इस्मह (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के नाम :

﴿1﴾..... तुम्हारा ख़त़ मुझे मौसूल हुवा और उस में दर्ज तमाम बातों से आगाही हुई। (याद रखो !) तुम्हें एक बहुत भारी ज़िम्मादारी सोंपी गई है जिस को पूरा करने से बड़े बड़े लोग आ़जिज़ आ जाते हैं। इस वक़्त तुम्हारी ह़ालत एक डूबते शख़्स की मानिन्द है, लिहाज़ा अपने नफ़्स के लिये निकलने का रास्ता तलाश करो और तक़्वा को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह तमाम उमूर को दुरुस्त रखता और आख़िरत में नजात पाने और हर मुसीबत से छुटकारा पाने का वसीला है और इस के ज़रीए तुम अच्छे अन्जाम को पा लोगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे तमाम कामों का अन्जाम अच्छा फ़रमाए और हमें अपनी रिज़ा वाले कामों की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन) बिला शुबा वोह सुनने वाला, क़रीब है।

﴾2﴿..... **ऐ अबू इस्मह ! याद रखो !** फ़ैसलों के अब्वाब बहुत बड़ा आ़लिम ही जान सकता है जो इ़ल्म के उसूल या'नी कुरआनो ह़दीस और फ़रामीने सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर अच्छी नज़र रखता हो और साह़िबे बसीरत (या'नी सह़ीह़ राय वाला) होने के साथ साथ इस्लामी अह़काम नाफ़िज़ करने की कुदरत भी रखता हो । जब तुम्हें किसी मस्अले में इश्काल पैदा हो तो कुरआनो सुन्नत और इज्माअ़ की त़रफ़ रुजूअ़ करना अगर उस का ह़ल इन उसूल (या'नी किताबो सुन्नत और इज्माअ़) में वाज़ेह़ त़ौर पर मिल जाए तो उस पर अ़मल करना और अगर सरा-ह़तन न मिले तो उस की नज़ाइर तलाश कर के उन पर उसूल से इस्तिदलाल करना । फिर उस राय पर अ़मल करना जो उसूल के ज़ियादा क़रीब और उस के ज़ियादा मुशाबेह हो । और उस के मु-तअ़ल्लिक़ अहले इ़ल्म और साह़िबे बसीरत लोगों से मश्वरा भी करते रहना । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उन में ऐसे लोग भी होंगे जो फ़िक़्ह में ऐसी समझ बूझ रखते होंगे जो तुम नहीं रखते ।

﴾3﴿..... **ऐ अबू इस्मह !** जब दोनों मुख़ालिफ़ फ़रीक़ (या'नी मुद्दई और मुद्दआ़ अ़लैह) फ़ैसला कराने तुम्हारी अ़दालत में ह़ाज़िर हों तो कमज़ोर और त़ाक़त वर, शरीफ़ और ज़लील को अपनी मजलिस में बिठाने, उन की बात सुनने और उन से बात चीत करने में यक्सां सुलूक करना और तुम्हारी त़रफ़ से कोई ऐसी बात न ज़ाहिर हो कि शरीफ़ आदमी नाह़क़ होने के बा वुजूद अपनी शराफ़त के बल बूते पर तुम से उम्मीद लगा बैठे और ज़लील अपने घटिया पन की वजह से ह़क़ पर होने के बा वुजूद

ह़क़ के मुआ़–मले में तुम से मायूस हो जाए।

《4》...... **ऐ अबू इस्मह !** जब दोनों फ़रीक़ बैठ जाएं तो उन्हें इत़्मीनान व सुकून से बैठने देना ताकि उन से ख़ौफ़ और (अ़दालत में आने की) शरमिन्दगी दूर हो जाए। फिर उन के साथ नरमी व हमदर्दी के लहजे में बात चीत करते हुए उन्हें अपनी बात समझाना और उन में से हर एक की बात पूरी तवज्जोह से सुनना। जो कुछ वोह कहना चाहते हों कहने देना और जब तक वोह अपना अपना मौक़िफ़ न बयान कर लें उस वक़्त तक फ़ैसला करने में जल्दी न करना। लेकिन अगर वोह फ़ुज़ूल बह़स में पड़ें तो उन्हें इस से रोक देना और उन्हें समझा देना (कि इस बात का अस्ल मुआ़–मले से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं) और बेज़ारी, ग़ुस्सा या रन्जो ग़म की ह़ालत में और पेशाब और भूक की शिद्दत के वक़्त भी कोई फ़ैसला न करना।

《5》...... उस वक़्त फ़ैसला न करना जब तुम्हारा दिल किसी और चीज़ में मश्ग़ूल हो बल्कि ऐसे वक़्त फ़ैसला करना जब तुम्हारा दिल दीगर फ़िक्रों से ख़ाली हो।

《6》...... रिश्तेदारों में जुदाई का फ़ैसला करने में जल्दी न करना बल्कि उन्हें बार बार इकट्ठे बिठाना (और उन के मुआ़–मले को सुलझाना) शायद ! वोह आपस में सुल्ह़ कर लें। फिर अगर वोह सुल्ह़ कर लेते हैं तो ठीक है वरना उन के दरमियान फ़ैसला कर देना। और किसी के ख़िलाफ़ उस वक़्त तक फ़ैसला न करना जब तक पूरी त़रह़ वोह चीज़ें वाज़ेह़ न हो जाएं जो उस पर इल्ज़ाम साबित करती हों।

《7》...... किसी गवाह को (किसी दलील की) तल्क़ीन न करना, न मजलिसे क़ज़ा में किसी को कोई इशारा करना और न ही क़ज़ा के उमूर अपने किसी क़राबत दार के सिपुर्द करना।

《8》...... किसी की दा'वत क़बूल न करना वरना तुझे तोहमत लगेगी।

《9》...... अ़दालत में किसी से (ग़ैर ज़रूरी) बात चीत न करना।

《10》...... ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ को हर चीज़ पर फ़ौक़िय्यत देना कि येह बात तुम्हें दुन्या व आख़िरत के मुआ़-मलात में काफ़ी होगी और इस की ब-र-कत से ग़लत़ फ़ैसला करने से सलामती नसीब होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें पाकीज़ा ज़िन्दगी और आख़िरत में बा इ़ज़्ज़त मक़ाम अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم)

(مناقبِ امامِ اعظم، الجزء الثانی، کتاب الامام الٰی ابی عصمة نوح بن ابی مریم رحمة اللہ تعالٰی علیہ، ص ۱۱۰-۱۱۱)

अकाबिर तलामिज़ा को नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान फ़रमाते हैं : "एक दिन बारिश हो रही थी, हम सब ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास ह़ाज़िर थे। ह़ाज़िरीन में ह़ज़रते

दावूद ताई, हज़रते आफ़िया औदी, हज़रते क़ासिम बिन मअ़न मस्ऊ़दी, हज़रते हफ़्स बिन गियास नख़्ई, हज़रते वकीअ़ बिन जर्राह़, हज़रते मालिक बिन मग़्वल, हज़रते ज़ुफ़र बिन हुज़ैल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن वग़ैरा शामिल थे।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया :

﴾1﴿...... तुम्हें देख कर मेरा दिल खुश होता और ग़म दूर होते हैं। मैं ने तुम्हारे लिये फ़िक़्ह को ज़ीन और लगाम दी है कि जब चाहो सुवारी करो और तुम्हारी ऐसी इ़ल्मी व अ़-मली तरबिय्यत की है कि लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, तुम्हारे अल्फ़ाज़ तलाश करेंगे। मैं ने लोगों की गरदनें तुम्हारे आगे झुका दी हैं। तुम में से हर एक क़ाज़ी बनने की सलाहिय्यत रखता है और दस तो ऐसे हैं कि वोह क़ाज़ियों की रहनुमाई कर सकते हैं। मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की अ़त़ा कर्दा इ़ल्मी जलालत का वासित़ा देता हूं कि इ़ल्मे दीन को दुन्यवी हुकूमत और मालो दौलत के हुसूल का ज़रीआ़ बना कर इस की क़द्रो क़ीमत को कम न कर देना।

क़ाज़ियों के लिये हिदायात :

﴾2﴿...... अगर तुम में से किसी पर क़ज़ा की ज़िम्मादारी आन पड़े और अपने अन्दर कोई ऐसी ख़ामी पाए जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों से छुपा रखा हो तो उस का क़ाज़ी बनना और इस की तन-ख़्वाह लेना जाइज़ नहीं और अगर तुम में से किसी को ज़रूरतन क़ाज़ी बनना पड़े तो अपने

और लोगों के दरमियान हिजाब (या'नी रुकावटें) हाइल न करे। पांचों नमाज़ें जामेअ् मस्जिद में अदा करे और हर नमाज़ के बा'द येह ए'लान करे : "किसी को कोई हाजत हो तो मुझ से मुलाक़ात करे।" क़ाज़ी को चाहिये कि नमाज़े इशा के बा'द भी तीन मर्तबा येही सदा लगाए फिर अपने घर जाए।

﴾3﴿..... अगर कोई क़ाज़ी बीमारी की वजह से अपनी ज़िम्मादारी पूरी न कर सके तो हिसाब लगा कर अपनी तन-ख़्वाह से इतने दिन की कटौती करवाए।

﴾4﴿..... अगर इमाम ने ख़ियानत की या फ़ैसला करने में ज़ुल्म व ज़ियादती का मुर-तकिब हुवा तो उस की इमामत बातिल ﴾या'नी ख़त्म﴿ हो जाएगी और उस का फ़ैसला करना जाइज़ न होगा। और अगर वोह ए'लानिया गुनाह का मुर-तकिब हो तो उस से क़रीब तरीन क़ाज़ी उस पर हद जारी करे।

تَمَّتْ بِالْخَیْر